

पर्यावरण की चीख: क्या सुनोगे तुम ?

सिंटू कुमार | राजनीति विज्ञान विशेष | द्वितीय वर्ष | देशबंधु कॉलेज

ईमेल आईडी- sintukumarjha123456@gmail.com

धुंधला सा आकाश, हवा में घुली सी आग, सुखी नदियां, प्यासे पेड़, हर तरफ है हाहाकार। मैंने ही तो बोया था, ये विनाश का बीज, अपने ही हाथों से, प्रकृति को दिया ये क्लेश।

बर्फ पिघल रही है, ऊंचे पहाड़ों से, समुद्र का जल स्तर बढ़ रहा किनारों से। तफान और बाढ़, अब आम बात हो गई, जीवन की ये धारा, सहमी सी खो गई। पक्षी उड़ रहे हैं, छोड़ के अपना बसेरा, जानवर तड़प रहे हैं, खो रहे हैं अपना डेरा।

मैंने ही तो छीना था, उनका आशियां अपने ही स्वार्थ में, भलू गया इंसानयत। आंखें नम हैं मेरी, दिल में है पछतावा, कैसे लौटाऊंगा मैं वो खोया हुआ समाँ? अब भी समय है, जाग जाओ इंसान, प्रकृत को बचा लो, यही है समाधान।

पेड़ लगाओ, पानी बचाओ, कम करो प्रदूषण, यही है जीवन का असली उद्देश्य और भूषण। कब समझेंगे हम, इस धरती का मोल? कब छोड़ेंगे हम, विनाश का यह ढोल? समय है अभी भी, संभल जाने का, प्रकृत को फिर से, अपना बनाने का।

वरना, यह धुंधलापन और बढ़ेगा, यह विनाश का बीज और फलेगा। सखू जाएँगी नदियां, प्यासे रह जाएँगे पेड़, हर तरफ होगा हाहाकार, हर तरफ हार का खेद। हाँ, मैंने ही लखा है ये, एक इंसान की आवाज़, जो रो रहा है, अपने ही कई गुनाहों पर आज। अब निभाएं हम अपनी, धरती के प्रति जिम्मेदारी, हर एक कदम से बदले, ये बगड़ी हुई इन्तहा सारी।